August 2021

Monthly Magazine
Year 7 Issue 8

Satyug

नारायण रेकी सतसंग परिवार

In Giving We Believe

सत्युग

हमारा उद्देश्य

"हर इंसान तन, मन, धन व संबंधों से स्वस्थ हो
हर घर में सुख, शांति समृद्धि हो व
हर व्यक्ति उन्नति, प्रगति व सफलता प्राप्त करे।"

वुधवार सतसंग

प्रत्येक वुधवार प्रात ११ वजे से ११.३० वजे तक

फेसवुक लाइव पर

सतसंग में भाग लेने के लिए नारायण रेकी सतसंग परिवार के फेसवुक पेज को ज्वाइन करें और सतसंग का आनंद लें।

नारायण गीत

नारायण-नारायण का उद्घोष जहाँ
राम राम मधुर धुन वहाँ
सबको खुशियाँ देता अपरम्पार,
जीवन में लाता सबके जो बहार
खोले, उन्नति, प्रगति, सफलता के द्वार,
बनाता सतयुग सा संसार
वो है, वो है हमारा नारायण रेकी सतसंग परिवार
हमारा एन.आर.एस.पी., प्यारा एन.आर.एस.पी.
प्यार, आदर, विश्वास बढ़ाता
रिश्तों को मजबूत बनाता, मजबूत बनाता
परोपकार का भाव जगाता
सच्चाई, नम्रता सेवा में विश्वास बढ़ाता
सत को करता अंगीकार
बनाता सतयुग सा संसार
वो है, वो है हमारा नारायण रेकी सतसंग परिवार
मुस्कान के राज बताता,
तन, मन, धन से देना सिखलाता
हमको जीना सिखलाता
घर-घर प्रेम के दीप जलाता
मन क्रम से जो हम देते वही लौटकर आता, वही लौटकर आता
बनाता सतयुग सा संसार
वो है, वो है हमारा नारायण रेकी सतसंग परिवार
एन.आर.एस.पी.,एन.आर.एस.पी.

।। 卐 ।।

पावन वाणी

प्रिय नारायण प्रेमियों,

।। नारायण नारायण ।।

जब हमें यह ज्ञात हुआ कि इस बार का अंक- विनम्रता पर है तो सहज ही एक ख्याल आया कि विनम्रता माँ सरस्वती जी का गहना है और जो इस गहने को धारण करता है उसे देखकर समृद्धि स्वयं ही आपके पास आने के लिए आतुर हो जाती हैं।

विनम्रता एक ऐसा गुण है जिसका पालन करना सिर्फ और सिर्फ आपके ऊपर निर्भर करता है। हम मानते हैं कि कई बार परिस्थितियाँ, व्यक्ति, प्रतिकूल होंगी और आपका धैर्य जवाब देने लगेगा ऐसी परिस्थिति में याद रखें कि यह परिस्थिति आपको दृढ़ करने के लिए, आपको मजबूत करने के लिए आई है। आपसे एक बात पूछते हैं, ' यदि आपका उपवास होता है तो कितनी भी मनपसंद कितनी भी स्वादिष्ट चीज आपके सामने आ जाए आप उसे खाते हैं? नहीं न। बस ऐसा ही एक व्रत हमें लेना है परिस्थितियाँ कितनी भी अनुकूल हों, व्यक्ति कितना भी जोर से बोल रहा हो हमने विनम्रता का व्रत लिया है और हमें हर परिस्थिति में अपना व्रत निभाना है।

सांसारिक जगत में रहते हुए यह आपको कठिन लग सकता है पर यह असंभव नहीं है, क्योंकि असंभव में ही तो संभव छिपा है। हमें दृढ़ता से विनम्रता के पथ पर अडिग रहना है, विनम्रता हमेशा अपने साथ लाती है - समृद्धि, प्यार, आदर, सम्मान। विनम्रता से हम अपने संबंधों को मजबूती से बाँध सकते हैं। जब हम ऐसा कर पाएंगे तो सच्चे मायनों में हम मनुष्य होने के अपने फ़र्ज को पूरा कर पाएंगे और एक ऐसे जीवन का निर्माण कर पाएंगे जो हर किसी के प्रति, परवाह, आदर, सम्मान और अपनेपन के भाव से भरा होगा जहाँ हर किसी के भीतर हमें उस परमपिता नारायण के सहज ही दर्शन हो जाएंगे और एक अद्भुत दुनिया का निर्माण होगा। बस एक ही बात, एक ही ख्याल - सदैव जीवन के सर्वोत्तम आभूषण विनम्रता को धारण किए रहें।

शेष कुशल

R. Modi

-: संपादिका :-

संध्या गुप्ता

09820122502

-: प्रधान कार्यालय :-

राजस्थानी मंडल कार्यालय

बेसमेंट रजनीगंधा बिल्डिंग, कृष्ण वाटिका मार्ग ,

गोकुल धाम, गोरेगांव (ई), मुंबई - ४०० ०६३.

-: क्षेत्रीय कार्यालय :-

अहमदाबाद	जैविनी शाह	:	9712945552
आगरा	अंजनामित्तल	:	9368028590
अकोला	रिया / शोभा अग्रवाल	:	9075322783/ 9423102461
अमरावती	तरुलता अग्रवाल	:	9422855590
बैंगलोर	शुभांगी अग्रवाल	:	9341402211
बैंगलोर	कनिष्का पोद्दार	:	7045589451
बड़ोदा	दीपा अग्रवाल	:	9327784837
भंडारा	गीता शारडा	:	9371323367
भीलवाड़ा	रेखा चौधरी	:	8947036241
बस्ती	पूनम गाड़िया	:	9839582411
भोपाल	रेनूगट्टानी	:	9826377979
बीना (मध्यप्रदेश)	रश्मि हुरकट	:	9425425421
बनारस	अनीता भालोटिया	:	9918388543
दिल्ली (पश्चिम)	रेनू विज	:	9899277422
दिल्ली (पूर्व)	मीनू कौशल	:	9717650598
दिल्ली (प्रीतमपुरा	मेघा गुप्ता	:	9968696600
धुले	कल्पना चौरोडिया	:	9421822478
डिब्रूगढ	निर्मलाकेडिया	:	8454875517
धनबाद	विनीता दुधानी	:	9431160611
देवरिया	ज्योति छापरिया	:	7607004420
गुवाहाटी	सरला लाहौटी	:	9435042637
गुडगाँव	शीतल शर्मा	:	9910997047
गोंदिया	पूजा अग्रवाल	:	9326811588
गाजियाबाद	करुणा अग्रवाल	:	9899026607
गोरखपुर	सविता नांगलिया	:	9807099210
हैदराबाद	स्नेहलता केडिया	:	9247819681
हरियाणा	चन्द्रकला अग्रवाल	:	9992724450
हींगन घाट	शीतल टिबरेवाल	:	9423431068
इंदौर	धनश्री शिरालकर	:	9324799502
इचलकरंजी	जयप्रकाश गोयनका	:	9422043578
जयपुर	सुनीता शर्मा	:	9828405616
जयपुर	प्रीती शर्मा	:	7877339275
जालना	रजनी अग्रवाल	:	8888882666
झुंझुनू	पुष्पा टिबरेवाल	:	9694966254
जलगाँव	कला अग्रवाल	:	9325038277
कानपुर	नीलम अग्रवाल	:	9956359597
खामगांव	प्रदीप गरोदिया	:	8149738686
कोल्हापुर	जयप्रकाश गोयनका	:	9422043578
कोलकत्ता	सी .एसंगीता चांडक	:	9330701290
कोलकत्ता	श्वेता केडिया	:	9831543533
मालेगांव	आरती चौधरी/रेखा गरोडिया		9673519641/ 9595659042
मोरबी (गुजरात)	कल्पना जोशी	:	8469927279
नागपुर	सुधा अग्रवाल	:	9373101818
नांदेड	चंदा काबरा	:	9422415436
नासिक	सुनीता अग्रवाल	:	9892344435
नवलगढ़	ममता सिंगरोडिया	:	9460844144
पिछौरा	स्मिता मुकेश भरतिया	:	9420068183
परतवाडा	राखी अग्रवाल	:	9763263911
पूना	आभा चौधरी	:	9373161261
पटना	अरबिंद कुमार	:	9422126725
पुरुलिया	मृदु राठी	:	9434012619
रायपुर	अदिति अग्रवाल	:	7898588999
रांची	आनंद चौधरी	:	9431115477
रामगढ़	पूर्वी अग्रवाल	:	9661515156
राउरकेला	उमा देवी अग्रवाल	:	9776890000
शोलापुर	सुवर्णा बल्दावा	:	9561414443
सूरत	रंजना गाडिया	:	9328199171
सीकर	सुषमा अक्षवाल	:	9320066700
सिलीगुड़ी	आकांक्षा मुंधडा	:	9564025556
विशाखापत्तनम	मंजू गुप्ता	:	9848936660
उदयपुर	गुणवंती गोयल	:	9223563020
विजयवाड़ा	किरण झंवर	:	9703933740
वर्धा	अन्नपूर्णा	:	9975388399
यवतमाल	वंदना सूचक	:	9325218899

। । 卐 । ।

संपादकीय

प्रिय पाठकों,

। । नारायण नारायण । ।

पिछले दिनों एक छोटे से पारिवारिक समारोह में परिवार के एक बच्चे से बहुत दिनों बाद मिलना हुआ । हमने देखा वह बच्चा जो कि एक मल्टीनेशनल कंपनी में एक बहुत ही बड़ी पोस्ट पर कार्यरत है बड़ी ही तत्परता से परिवार के सभी लोगों का सत्कार कर रहा था । सबके पाँव छूकर आदर से बैठाना, चाय नाश्ता स्वयं परोसना सबके ध्यान को अपनी ओर आकर्षित कर रहा था । अपनी सफलता का श्रेय वह बारम्बार अपने बड़ों के आशीर्वाद को दे रहा था ।

विनम्रता उसके अंग- अंग से छलक रही थी । छोटे बड़ों को यथायोग्य सम्मान, थैंक्यू, सॉरी जैसे शब्द उसके संस्कारों को परिलक्षित कर रहे थे । साक्षात विनम्रता की मूरत है वह बच्चा । उसे देख सहसा ही अपनी सतयुग पत्रिका के लिए विषय सूझ गया- विनम्रता । हम सभी विनम्रता के गहने को धारण करेंगे इन शुभकामनाओं सहित ।

आपकी अपनी

संध्या गुप्ता

अंतरर्राष्ट्रीय कार्यालय :

नेपाल	रिचा केडिया	977985-1132261
आस्ट्रेलिया	रंजना मोदी	61470045681
बैंकाक	गायत्री अग्रवाल	66897604198
कनाडा	पूजा आनंद	14168547020
दुबई	विमला पोद्दार	971528371106
शारजहा	शिल्पा मांजरे	971501752655
जकार्ता	अपेक्षा जोगनी	9324889800
लन्दन	सी.ए. अक्षता अग्रवाल	447828015548
सिंगापुर	पूजा गुप्ता	6591454445
डबलिनओहियो अमेरिका	स्नेह नारायण अग्रवाल	1-614-787-3341

आपके विचार सकारात्मक सोच पर आधारित आपके लेख, काव्य संग्रह आमंत्रित है - सतयुग को साकार करने के लिये/आपके विचार हमारे लिये मूल्यवान हैं । आप हमारी कोशिश को आगे बढ़ाने में हमारी मदद कर सकते है । अपने विचार उदगार, काव्य लेखन हमें पत्र द्वारा, ई-मेल द्वारा भेज सकते हैं ।

हमारा ई-मेल है 2014satyug@gmail.com

we are on net

narayanreikisatsangparivar @narayanreiki

प्रकाशक : नारायण रेकी सतसंग परिवार

मुद्रक : श्रीरंग प्रिन्टर्स प्रा. लि. मुंबई.

Call : 022-67847777

विनम्रता एक ऐसा गुण है जो लाखों की भीड़ में आपको एक विशिष्ट स्थान दिलाता है । विनम्रता का तात्पर्य है हर समय नम्र भाव में रहना, कोमलता के भावों से भरे रहना, प्रसन्नता, खुशी, आनंद, उत्साह से भरे रहना । दूसरों के प्रति प्यार और स्नेह का भाव, सहयोग व सहायता का भाव भ्रातत्व का भाव विनम्रता के गुणों को विकसित करता है । विनम्रता हृदय को विशाल, ईमानदार बनाकर संबंधों को सहज और सरल बनाती है । विनम्रता आपके भीतर विश्वास जगाती है, आपके भीतर अनवरत ऊर्जा का संचार कर आपके जीवन को उपयोगी बनाती है । विनम्रता एकमात्र ऐसा गुण है जो संतुष्टि, स्नेह और सकारात्मकता से आपके जीवन को भरती चली जाती है । धैर्य की जननी है विनम्रता । विनम्रता से धैर्य विकसित होता है और धैर्य से आप के भीतर सोचने-समझने की अद्‌भुत सकारात्मक शक्ति विकसित होती है जो आपके व्यक्तित्व को एक प्रचंड आभा से भर देती है । विनम्रता सत्य को अपने साथ लेकर आती है और सत्य आपके भीतर मनोबल को विकसित करता है । जब विनम्रता इतने अधिक गुणों से भरपूर है तो उसे जीवन में उतारना जीवन को सार्थक बनाना है । विनम्रता जन्मजात नहीं है, आनुवांशिक नहीं है, इसे समाज में रहते हुए समाज से, व्यक्तियों से, परिस्थितियों से आसानी से सीखा जा सकता है।

अहम का त्याग विनम्रता की पहली सीढ़ी है । हर कार्य के लिए स्वयं को माध्यम मानें । जीवन में जो भी हासिल है - पद, प्रतिष्ठा, धन, दौलत, मान, सम्मान, वैभव को ईश कृपा मानें । श्रीमद्‌भागवत गीता में लिखा है, **'तू जो भी कर्म करता है वो मुझे (ईश्वर) को अर्पण करता चल व स्वयं को निमित्त मात्र मान कर कार्य का निर्वहन कर।'** जब आप ऐसा करते हैं तो दया, ममता, करुणा जीवन के अनिवार्य अंग बन जाते है और मन झुकता जाता है उस परम शक्ति के सामने । विनम्रता एक ऐसा गुण है जो कठिनतम परिस्थितियों में भी सफलता की और अग्रसर करती है । जब तूफ़ान आता है तो सबसे पहले बड़े-बड़े अकड़े खड़े वृक्ष ही उखाड़ते हैं पर कोमल-सी, लचीली-सी घास जो तेज हवाओं और पानी के आगे अपना सिर झुका देती है वह तूफान गुजर जाने के बाद भी उसी जोश, और फुर्ती से खड़ी रहती है । विनम्रता हमें झुकना सिखाती है । विनम्रता हमारे बाहरी स्वरूप को तो आकर्षक बनाती ही है हमारे आतंरिक कोशिकाओं को भी लचीला बनाती है । विनम्रता हमें जीवन में उत्कर्ष की ओर ले जाती है । जब हम विनम्रता के भाव से भरे होते हैं तो हम प्रशंसा को सहजता से अपनाते हैं। हर किसी से, हर परिस्थिति से, हर व्यक्ति से सीखने का भाव विकसित करती है विनम्रता की आदत ।

राज दीदी और नारायण शास्त्र के जीवन में अनुसार, विनम्रता का पालन करने के लिए हमें अपने जीवन में कुछ परिवर्तन लाना आवश्यक है:-

- प्रातः आँख खोलते ही उस परम शक्ति का आभार व्यक्त करें जीवन का एक और नया दिन दिखाने के लिए। जब आप ऐसा करते हैं तो आपके भीतर का **मैं** हवा होता जाता है आप समझने लगते हैं कि आपके हाथ में
- तो अपनी श्वास भी नहीं है फिर कैसा घमंड, कैसी अकड़?
- बड़ों का आशीर्वाद लें। यह नियम आपको झुकना सिखाएगा। रिश्तों का मोल सिखाएगा।
- जीवन में जो कुछ भी हासिल है उसके लिए आभार व्यक्त करें।
- सोचें कि आज ऐसा क्या करूँ जिससे मुझसे जुड़े हर व्यक्ति का जीवन सरल और सहज हो जाए।
- दूसरों के लिए प्रार्थना करें। उनकी उन्नति और सप्त सितारा जीवन की चाहना रखें।
- सतसंग करें।
- समाज सेवा का कार्य करें।
- उदार हृदय से तन, मन धन से अपना सर्वोत्तम देना सीखें।
- सबके प्रति सम्मान का भाव रखें। करुणा का भाव रखें। क्रोध, शिकायत निंदा से दूर रहें।
- हर किसी से सीखने का प्रयत्न करें। अपनी सफलता का श्रेय दूसरों को दें।
- वाणी की साधना करते हुए संयमित ही बोले यदि आवश्यक है तो ही बोले।

छोटी- छोटी बातों को अपनाएँ और जीवन को विनम्रता से भर लें क्योंकिः- **नमताई सबसे बड़ी नम चलिए सब कोय। तकरी में धर तोलिये, बढे सो नमती होय।** अर्थात विनम्रता सभी गुणों में सर्वोत्तम गुण है। जिस प्रकार तकरी या तराजू में किसी वस्तु को जब तुला जाता है तो वजनदार वस्तु वाला पलड़ा झुक जाता है। इसी तरह विनम्रता से भरा व्यक्ति सदैव झुका हुआ होता और जीवन में ऊंचा ही उठता जाता है। यदि आप सप्त सितारा जीवन जीना चाहते हैं तो विनम्रता के गहने को धारण करें।

अगर दीदी आपको सम्पर्क करने कहे तो इस नंबर पर सम्पर्क करे।

9167198886 / 9821327562

अगर दीदी संपर्क करने के लिए कहें तो कृपया इस नंबर पर केवल व्हाट्सएप करें।

ज्ञान मँजूषा

वर्चुयल महायज्ञ की अविरल धारा निरंतर बह रही है । दीदी का प्रतिदिन प्रातः ४.३० और मध्यान ११ बजे आना सतसंगियों से मिलना और उन्हें जीवन सुधार के छोटे-छोटे टिप्स देकर जीवन को सप्त सितारा बनाने का प्रयास करना अतुलनीय है । **जीवन सुधार के कुछ ऐसे ही टिप्स :-**

१) दीदी ने कहा, 'यदि किसी के बारे में कोई ऐसी बात आप कहते हैं, जो उसकी उपस्थिति में आप नहीं कह सकते या कहने से डरते हैं वह निंदा की श्रेणी में आता है ।' यदि आप किसी विषय पर अपना मत रख रहे हैं जैसे की सरकारी नियमों या संस्था के नियमों के बारे में तो निंदा की श्रेणी में नहीं आता ।

२) जब आप किसी के सेवा कर रहे हैं और उसके चेहरे पर मुस्कान और होठों पर आशीर्वाद है तो नारायण आपको शक्ति और सामर्थ्य प्रदान करता जाता है और आपके सेवा के कार्य को आसन करता जाता है ।

३) ब्रह्म मुहूर्त की प्रार्थनाएं आपके इहलोक के साथ-साथ परलोक को भी संवारती हैं ।

४) दीदी कहती हैं हमारे भाग्य की रेखाएं प्रतिपल प्रतिक्षण बदलती हैं । जब आप बारम्बार यह कहते हैं यह हमारा गोल्डन पीरियड चल रहा है तो सचमुच आपका जीवन गोल्डन पीरियड में बदल जाता है ।

५) किसी के यह प्रश्न पूछने पर कि, 'दीदी क्या हमारे द्वारा पितरों तक की गई पूजा और भोजन उन तक पहुँचता हैं ?' दीदी ने कहा मृत्यु के बाद हम पूर्वजों को याद करें उन तक भोजन पानी दें वह उन तक पहुँचता है कि नहीं यह तो नहीं पता लेकिन उनके जीवित रहते उनकी केयर करना उनकी परवाह करके आप उनके जीवन को खुशहाल अवश्य बना सकते हैं ।

६) विनम्रता और समृद्धि एक ही सिक्के के दो पहलू हैं आप जीवन में, व्यवहार में, जितने विनम्र होंगे उतनी ही समृद्धि को अपने जीवन में आकर्षित करेंगे ।

७) नकारात्मकता हमारे ऊपर हावी न हो इसके लिए हमें यह समझना चाहिए कि प्रत्येक व्यक्ति के अपने विचार हैं। हमारी सोच उसे सकारात्मक और नकारात्मक बनाती है । जब किसी के विचार या व्यवहार आपके प्रतिकूल होते हैं तो हमारा मन अशांत हो जाता है ।

अ) ऐसे में हमें सबसे पहले उस स्थान से हट जाना है क्योंकि आपकी, सामने वाले की और उस जगह की नकारात्मकता को जाग्रत कर देती है ।

ब) आप अंगूठे के ऊपरी पोर को प्रथमा उँगली के पोर से लगाएं यह आपके क्रोध और असंतुष्टि को शांत कर देती है ।

क) जिससे आप हर्ट हो रहे हैं उसे bless करना शुरू करें, 'हे नारायण इनका जीवन सुख, शांति समृद्धि से भर दीजिए।' इसका दोहरा लाभ होगा एक तो आप उनको आशीर्वाद देते हैं दूसरे आप जो देते हैं वह आपके खाते में जमा होते जाते हैं । आपके द्वारा भेजा आशीर्वाद सामने वाले के व्यवहार को बदल देता है।

८) हर घटना के पीछे एक कारण होता है जिसे हम घटना घटने के बाद ढूंढते हैं विशेषकर यदि वह घटना नकारात्मक है । अच्छे कर्म करेंगे अच्छी घटनाएं घटेंगी और इसके विपरीत घटना घटेगी तो इसकी विपरीत घटना घटेगी । जब आप सप्तसितारा जीवन जी रहे हों तो बैठकर सोचें कि हम ऐसा क्या कर रहे हैं सप्तसितारा जी पा रहे हैं और, उन कार्यों को करना फिर उन नियमों का पालन करना जारी रखें और उन अच्छे कर्मों की मात्रा बढ़ा दें ।

९) यदि किसी व्यक्ति की बात आपको बुरी लगी तो सबसे पहले हमें यह समझना है कि यह उसकी अपनी विचारधारा है । जो उसने कहा उस पर विचार करेंगें तो आप समझ जाएंगे कि उसमें सच्चाई छिपी होती है यदि आप आत्मचिंतन करेंगे तो आप यह समझ जाएंगे कि उसने कडवी सच्चाई गई है तो उसे सुधारना है। यदि वह व्यक्ति गलत है तो उसे इग्नोर करिए सोचिए के उनके कहने से हमारे कर्म हलके होते हैं ।

१०) भविष्य में वह व्यक्ति ऐसा व्यवहार न करे इसके लिए आँखें बंद करके बैठ जाएँ और जिस व्यक्ति ने आपके साथ गलत व्यवहार किया उस व्यक्ति को अपनी आँखों के आगे लाकर जैसा व्यवहार आप उनसे उम्मीद रखते हैं वैसा व्यवहार वह आपसे कर रहे हैं ऐसा विजुलाइज करें और यदि आप किसी से भी इस बात की चर्चा करें तो उनके गलत व्यवहार की नहीं जो व्यवहार आपने किया उस व्यवहार की चर्चा करें । शीघ्र ही यह उनका व्यवहार ऐसा होता जाएगा ।

११) यदि आपकी कोई गलती नहीं है और फिर भी आपको बहुत कुछ भुगतना पड़ रहा है इसका कारण है - कोई भी कर्म जो आप भोग रहे हैं वह आपके कर्मों का ही परिणाम है । हमारे कर्मों का ड्रम ऊपर उस नारायण के सामने रखा रहता है । जब हम बुरे कर्म करते हैं तो हमारे ड्रम में रेत डाला जाता है और जब हम अच्छे कर्म करते हैं तो उसमें गेंहू डाला जाता है । ऐसे लेयर आपके ड्रम में जमा होते जाते हैं और उसी अनुसार आपको फल मिलता हैं । यदि बुरे कर्म करने के बाद भी अच्छे फल मिल रहे हैं तो समझ लें कि आपके अनाज का खाता चल रहा है ।

१२) यदि हमारी मृत्यु के समय हमारे अच्छे/ बुरे कर्मों खाता पूरा सैटल नहीं हो पाता तो वह कर्म हमारे साथ जाते हैं और उसके अनुसार हम फल भुगतते हैं ।

१३) विचार हमारे नियंत्रण में नहीं हैं पर वाणी पर हमारा नियंत्रण है । यदि हमारी वाणी निरंतर संयम में है तो प्रकृति हमारे विचारों को संभाल लेती है और हमारे कर्म नहीं बंधते लेकिन यदि हमारे भीतर वाणी का संयम नहीं है तो हमारे कर्म अवश्य ही बंधते हैं । विद्या विनयेन शोभते ।

गिजेल फर्नान्डीज को जन्मदिन (३० अगस्त) पर सुख, शांति,समृद्धि, उन्नति, प्रगति, सेहत, सफलता से भरे सप्तसितारा जीवन का नारायण आशीर्वाद

यशोधाम विद्यालय, जहां हमारे बच्चों ने विद्या ग्रहण की का लोगो था - **विद्या विनयेन शोभते** और वहाँ के प्रधानाध्यापक से लेकर अध्यापक व सभी स्तर पर कार्य कर रहे लोग इसको प्रतिबिम्बित करते थे।

यह वाक्य शत प्रतिशत सत्य है और इस सत्य को बारम्बार प्रस्थापित किया है हमारी गुरु राज दीदी के मार्गदर्शन ने व उनके द्वारा कराए जा रहे प्रयोगों ने ।

किसी का दिल जीतने की विद्या विनम्रता अपनाने से ही आती है । विनम्रता दिल जीतने के साथ साथ प्रचुरता, यश, समृद्धि जैसे अनेक जैक्पॉट भी साथ लाती है । बाहरी दुनिया तो सँवरती ही है साथ ही आंतरिक आनंद का भाव अप्रतिम रूप से बढ़ जाता है । विनम्र व्यक्ति संसार का सबसे शक्तिशाली व्यक्ति होता है । उसकी इंद्रियाँ व्यक्ति व वातावरण के प्रभावों से अप्रभावित रहते हुए मन को असीम शांति का आनंद अनुभव करने में सहायक होती हैं । जिस व्यक्ति का मन संयमित है, जिसने स्वयं पर विजय पा ली है वही जीवन को अर्थपूर्ण बना पाता है ।

प्रिय युवाओं आओ देखें कि विनम्र व्यक्ति के लक्षण क्या हैं -

- जो माता, पिता, गुरु के प्रति विनम्र होने के साथ-साथ हर चर अचर में उसी परम शक्ति का दर्शन करे ।
- जो कर्ता भाव का परित्याग कर स्वयं को एक माध्यम माने जैसे गाड़ी को मोटर चलाती है वैसे ही संसार में चल रही हर क्रिया का संचालन किसी आलौकिक शक्ति के हाथ में हैं। हमें सिर्फ और सिर्फ अपना सर्वोत्तम देना है।
- जिसका व्यवहार पद, प्रतिष्ठा, लाभ , हानि पर केंद्रित न होकर हर व्यक्ति में बसे नारायण को देखता है और सबके प्रति समान आदर का भाव रखता है ।
- जो परिवार को राजनीति से परे रख पारदर्शिता रखता है और अपने सिद्धांतों पर अडिग रहता है । अपनी कथनी व करनी में निर्मल है ।
- अपने स्वजनों की बातों को गुप्त रखते हुए उनके विश्वास व स्वाभिमान को बनाए रखे । अगर किसी की कही बात बुरी भी लगे तो भी उस पर बहस न कर शांति से समझाए अथवा उसके शान्त होने का इंतज़ार करे ।
- जो व्यक्ति किसी की पीठ पीछे कहानियाँ नहीं बनाता और न ही किसी के द्वारा किए गए कार्य का क्रेडिट लेता है अपितु सत्य को धारण कर अपने द्वारा दिए गए सहयोग को भी गुप्त रखता है ।
- जो शांति से दूसरों द्वारा किए जा रहे प्रतिकूल व्यवहार में भी शांति धारण करे रहता है।
- ऐसा व्यक्ति विपरीत परिस्थितियों में भी छिपे संदेश को ग्रहण करता है और यह भाव बनाए रखता है कि यह परिस्थिति मेरी भलाई के लिए आइ है ।
- विनम्र व्यक्ति सदेव सही व उचित शब्दों का ही प्रयोग करता है जो सामने वाले व्यक्ति को हर्षित करते हैं। साथ ही हर पल नारायण का धन्यवाद करता है ।
- सार यही है कि यदि हम जीवन को सहज, सरल, सुंदर, सार्थक, सफल संपन्न व सार्थक बनाना चाहते हैं तो सिर्फ और सिर्फ विनम्रता के आभूषण को धारण करें और इस गुण को आत्मसात करें । विनम्रता आपके जीवन के हर क्षेत्र को समृद्ध करती है और रखती भी है । विनम्रता अपनाए, प्रचुरता पाएँ ।

बच्चों की फुलवारी

ए. एल कैनेडी कहते हैं, 'विनम्र बनें। याद रखें आप अपनी क्षमताओं की सीमाओं को नहीं पहचानते। आप सफल हैं या नहीं लेकिन यदि आप लगातार अपनी क्षमताओं को विकसित करते हैं, आप अपने जीवन को समृद्ध बनाते हैं और अजनबियों की भी प्रसन्नता का कारण बनते हैं।

विनम्रता बुद्धिमानों की ताकत है। राज दीदी और समस्त NRSP इस क्षेत्र में प्रयासरत हैं कि हर व्यक्ति विनम्रता का गहना धारण करें और यह ही इस बार सतयुग का हमारा अंक भी है। इस अंक में हम विनम्रता के लाभ और इसे धारण करके समृद्धि किस तरह प्राप्त कर सकते हैं इन विषयों पर विचार कर रहे हैं। हम सभी जानते हैं की अंग्रेज बहुत अधिक शक्तिशाली थे, गाँधी जी ने स्वयं विनम्रता को धारण किया। वह कभी अंग्रेजों के खिलाफ खड़े नहीं हुए, वह खड़े हुए - अपने आदर्शों के लिए अपने सिद्दांतों के लिए और अंततः अंग्रेजों को उनके आगे झुकना ही पड़ा और फिर देश स्वतंत्र हुआ।

विनम्र होने का तात्पर्य है दूसरों की भावनाओं के प्रति जागरूक होना। अच्छे व्यवहार की कोई कीमत नहीं है लेकिन यह व्यवहार लोगों को कैसा महसूस कराता है इससे बहुत फर्क पड़ता है। आपकी विनम्रता को लोग स्वीकार करते हैं और उसकी प्रशंसा भी करते हैं। विनम्रता और नम्रता एक दूसरे के पूरक हैं। हम सब इस संसार में एक विशेष उद्देश्य के साथ आए हैं। फिर अभिमान और अहम किसलिए ? राज दीदी कहती हैं, ' 'विनम्रता और समृद्धि का चोली दामन का साथ है'। यदि आप अपने अध्यापकों के साथ मेंटर्स के साथ, अपने मित्रों के साथ विनम्र हैं तो वह आपको इतना अधिक सह्योग करते हैं की कई बार आपकी गलतियों पर भी ध्यान नहीं जाता।

विनम्र कैसे बनें:-

१) मीता और मधुर बोलें।

२) लोगों की उपस्थिति को समझें और उनकी बातें सुनें और समझें।

३) छोटी- छोटी बातों का ध्यान रखकर उन्हें दिखाएँ कि आप उनकी परवाह करते हैं।

४) कृपया, सॉरी को अपने शब्दकोष का अभिन्न अंग बनायें।

५) मददगार बने और सही और उचित शब्दों का प्रयोग करें।

विनम्र बनें और समृद्धि को आकर्षित करें।

पद्म हेड़ा को जन्मदिन (३१ अगस्त) पर सुख, शांति, समृद्धि, उन्नति, प्रगति, सेहत, सफलता से भरे सप्तसितारा जीवन का नारायण आशीर्वाद।

॥ 卐 ॥

दीदी के छाँव तले

दीदी के छाँव तले स्तंभ में हम सतसंगियों द्वारा पूछे और राज दीदी द्वारा दिए गए उत्तर प्रस्तुत कर रहे हैं :-

सतसंगी :- दीदी कभी-कभी जीवन में ऐसे अवसर आ जाते हैं जब यह प्रश्न आ जाता है कि हम सही व्यक्ति का साथ दें या पावरफुल व्यक्ति का ?

दीदी :- आप सदैव सही व्यक्ति का साथ दें क्योंकि आप जब सही व्यक्ति का साथ देते हैं तो आप धीरे- धीरे पावरफुल बन जाएंगे और उन्नति, प्रगति, समृद्धि को प्राप्त कर लेते हैं । इसके विपरीत यदि आप पावरफुल व्यक्ति का साथ देते हैं तो आप उन्नति तो करेंगे पर वह उन्नति कुछ समय के लिए ही होगीं ।

सतसंगी :- दीदी हम विचार, वाणी व्यवहार से सकारात्मक हैं कार्मिक हीलिंग भी कर रहे हैं पर दूसरे व्यक्ति का व्यवहार नकारात्मक ही है । ऐसे में क्या करें ?

दीदी :- जब हमारा तन अस्वस्थ होता है तो हम यह सोचते हैं कि मैंने ऐसा क्या खाया जो हमारा तन अस्वस्थ हुआ। ठीक उसी प्रकार यदि किसी का व्यवहार आपके प्रतिकूल है आप को यह मनन करना है यदि मुझे बिना वजह हर्ट मिल रहा है तो मैंने अवश्य ही किसी को हर्ट पहुँचाया है क्योंकि हमें वह ही मिलता है जो हम देते हैं । अपने आप को सुधारने की दिशा में कार्य करना है ।

सतसंगी :- दीदी घर की जिम्मेवारी और बाहर की जिम्मेदारी किस तरह से सर्वोत्तम तरीके से निभा सकते हैं?

दीदी :- देखिए सभी को २४ घंटे मिले हैं उन्हें तीन भागों में बांटे ८/८/८ । इनमें से ८ घंटे आपके नींद के हो गए। ८ घंटे घर के बाहर की जिम्मेदारियों को पूरा करूँ । बाकि ८ घंटे जो आप घर के कामों के लिए रखें । टी. वी. मोबाइल और सोशल मीडिया पर समय व्यतीत करते समय अन्य काम जैसे सब्जी काटना, ड्रॉवर ठीक करना कर सकते हैं । कामों की लिस्ट बना लें जो काम होते जाएँ उन पर टिक करते जाएँ । काम करने का समय निर्धारित करें और उसी निर्धारित समय में काम को पूरा करें ।

सतसंगी:- दीदी दूसरों को दोष देना इतना आसन क्यों हैं ? क्या यह उचित है?

दीदी:- दूसरों को दोषारोपण करना सही नहीं है, क्योंकि जब आप दूसरों को दोष देते हैं तो आपके कर्म बंधते हैं, ऐसा न करें । कोई भी गलती हुई है तो उनको जब अपने ऊपर लेते हैं तो जब हमसे सच में कोई गलती होती है तो वह परम पिता हमें आसानी से क्षमा कर देते हैं ।

प्रेरणादायक वृतांत

एक इंसान का किरदार

यह दृश्य टोक्यो ओलंपिक में पुरुषों की हाई जम्प फाइनल का है । फाइनल में इटली के जियानमारको ताम्बरी का सामना क़तर के मुताज़ इसा बर्शिम से हुआ। दोनों ने २.३७ मीटर की छलांग लगाई और बराबरी पर रहे ! उसके बाद ओलंपिक अधिकारियों ने उनमें से प्रत्येक को तीन और प्रयास दिए, लेकिन वे २.३७ मीटर से अधिक तक नहीं पहुंच पाए। उन दोनों को एक और प्रयास दिया गया, लेकिन उसी वक्त पैर में गंभीर चोट के कारण अंतिम प्रयास से पीछे हट गए। ये वो क्षण था जब मुताज बरशिम के सामने कोई दूसरा विरोधी नहीं था और उस पल वह आसानी से अकेले सोने के क़रीब पहुंच सकते थे।

लेकिन बर्शिम के दिमाग में कुछ घूम रहा था और फिर कुछ सोचकर उसने एक अधिकारी से पूछा, 'अगर मैं भी अंतिम प्रयास से पीछे हट जाऊं तो क्या हम दोनों के बीच गोल्ड मैडल साझा किया जा सकता है?' कुछ देर बाद एक अधिकारी जाँच कर पुष्टि करता है और कहता हैं 'हाँ बेसक गोल्ड आप दोनों के बीच साझा किया जाएगा।'

बर्शिम के पास और ज्यादा सोचने के लिए कुछ नहीं था । उसने आखिरी प्रयास से हटने की घोषणा की । यह देख इटली का प्रतिद्वन्दी ताम्बरी दौड़ा और मुताज बरसीम को गले लगा कर चिल्लाया । दोनों भावुक होकर रोने लगे ।

लोगों ने जो देखा वह खेलों में प्यार का एक बड़ा हिस्सा था जो दिलों को छूता है । यह अपर्णनीय खेल भावना को प्रकट करता है जो धर्मों, रंगों और सीमाओं को अप्रासंगिक बना देता है ।

इसी दुनिया में लोग सुख दुख साझा करने से डरते है और कुछ महान लोग गोल्ड मेडल तक साझा कर रहे हैं।

जीभ और दांत

काशी में एक संत रहते थे । उनके आश्रम में कई शिष्य अध्ययन करते थे । कुछ शिष्यों की शिक्षा पूरी होने कर एक दिन संत ने उन्हें बुलाकर कहा, 'अब तुम लोगों को समाज के कठोर नियमो का पालन करते हुए भी विनम्रतापूर्वक समाज की सेवा करनी होगी।'

एक शिष्य ने कहा, 'गुरुदेव हर समय विनम्रता से कम नहीं चलता।'

संत समझ गए के अभी उसमें अभिमान का अंश मौजूद है। थोड़ी देर में रहने के बाद उन्होंने कहा, 'ज़रा मेरे मुँह के अंदर ध्यान से देख कर बताओ कि अब कितने दाँत शेष रह गए हैं?'

बारी-बारी सभी से सभी शिष्यों ने संत का मुँह देखा और एक साथ बोले 'आप के सभी दाँत टूट गए हैं।'

संत ने फिर कहा, 'जीभ है कि नहीं?' शिष्यों ने समझा गुरु जी मजाक कर रहे हैं।

बोलें, 'उसे देखने की ज़रूरत ही नहीं है। जीभ अंत तक साथ रहती हैं।'

संत ने कहा 'यह अजीब बात है के जीभ जन्म से मृत्यु तक साथ रहती है और दाँत जो बाद में आते हैं पहले ही साथ छोड़ देते है, जबकि उन्हें बाद में जाना चाहिए । ऐसा क्यों होता है?'

एक शिष्य बोला 'यह तो सृष्टि का नियम है।'

संत ने कहा, 'नहीं वत्स। इसका जवाब इतना सरल नहीं हैं जितना तुम समझ रहे हो । जीभ इसलिए नहीं टूटती क्योंकि उसमें लोच है।

वह विनम्र होकर अंदर पड़ी रहती है । उसमें किसी तरह का अहंकार नहीं है । उसमें विनम्रता से सब कुछ सहने की शक्ति है।

इसलिए वह हमारा हमेशा साथ देती है। जबकि दाँत बहुत कठोर होते हैं । उन्हें अपनी कठोरता का अभिमान रहता है । वे जानते हैं कि उनके कारण ही मनुष्य की शोभा बढ़ती है इसलिए वे निष्ठुर होते हैं । उनका यहीं अहंकार और कठोरता उनके क्षरण का कारण है। इसलिए तुम्हें यदि समाज की सेवा गरिमा के साथ करनी है तो जीभ की तरह नम्र बनकर नियमो का पालन करो।'

जॉर्ज वाशिंग्टन

एक बार अमेरिका के राष्ट्रपति जॉर्ज वाशिंग्टन घोड़े पर बैठ कहीं जा रहे थे । घुड़सवार बने जॉर्ज वाशिंग्टन ने देखा-कुछ सैनिक एक लकड़ी के गट्ठे को उठाने में सफल नहीं हो पा रहे थे। वह बार-बार कोशिश करते पर असफल रहते। सैनिकों का नायक भी वहीं खड़ा था, पर वह उनकी मदद नहीं कर रहा था । वाशिंग्टन को बहुत आश्चर्य हुआ उन्होंने नायक से पूछा, 'आप इन सैनिकों की सहायता क्यों नहीं कर रहे?' नायक ने उतर दिया, 'मैं इनका नायक हूं और मेरा काम इनको आदेश देना है।' वाशिंग्टन ने सुना और वह घोड़े से उतरकर उन सैनिकों के पास गए और उन्होंने उस गट्ठे को उठाने में उनकी मदद की। वे घोड़े पर सवार होकर नायक से बोले, 'अगली बार जब तुम्हें सहायता की जरुरत पड़े तो तुम अपने कमांडर इन चीफ को बुलावा लेना।' उनके जाने के बाद नायक और सैनिकों को पता चला कि वह घुड़सवार और कोई नहीं बल्कि स्वयं ही जॉर्ज वाशिंग्टन थे।

महान व्यक्ति वही हैं जो दूसरों की सुनता है और उनसे विनम्र व्यवहार करता है । ऐसा व्यक्ति सबका अर्जित करता है और लोग उसे सम्मान की द्रष्टि से देखते हैं। उसकी सत्य में निष्ठा होती है। वह नम्र स्वभाव का कभी त्याग नहीं करता। जिस प्रकार दुष्ट अपनी दुष्टता सर्प अपना विष और सिंह रक्तपान नहीं छोड़ता उसी प्रकार उदार चित व्यक्ति अपनी विनम्र उदारता नहीं छोड़ता ।

जैकपोट समाचार

नारायण भवन में प्रातः ४.३० और ११ बजे जो प्रार्थनाएँ हो रही हैं इसके अतिरिक्त नारायण प्रार्थना को तीन बार रिपीट किया जाएगा ।

हर सकारात्मक वाक्य के बाद ११ राम राम की माला आधे घंटे तक होंगी । जिनका समय इस प्रकार रहेगा : कृपया समय नोट करें और भवन में हो रही प्रार्थनाओं का लाभ उठाएं। यह प्रार्थनाएं सिर्फ ज़ूम पर होगीं ।

ज़ूम लिंक :-

https://us02web.zoom.us/j/88581143451

१) हे नारायण आपका धन्यवाद है, आप हर पल हर क्षण हमारे साथ हैं इसीलिये आज का दिन हमारे जीवन का सवीत्तम दिन है, सर्वश्रेष्ठ दिन है प्यार ,आदर सम्मान, प्रशंसा व जैकपॉट से भरा हुआ। (जैकपोट भरा दिन)

समयः-प्रातः ६ .३० से ७ बजे तक
दोपहर २ बजे से २.३० तक
रात्रि ११ बजे से ११.३० तक

२) हमारे भीतर असीम शक्ति है, असीम शांति है, असीम शांति है, असीम शांति है।

समयः- प्रातः ७ बजे से ७.३० (शांति)
दोपहर २.३० मिनट से ३ बजे तक
रात्रि ११.३० से १२ बजे तक

३) हे हमारे पास प्रचुर मात्रा में धन है जिसका हम सदुपयोग करते हैं ।(धन,समृद्धि)

समयः-प्रातः ७.३० से ८ बजे तक
दोपहर ३ बजे से ३.३० तक
रात्रि १२ से १२.३० बजे तक

४) हे नारायण हमारे संपर्क में आने वाला हर व्यक्ति, वस्तु, जगह, परिस्थिति, वातावरण, समय, धन, मौसम, यातायात, जन्म कुंडली, प्रकृति ब्रह्मांड और पूरी कायनात सभी कुछ हमारे अनुकूल है। नारायण आपका धन्यवाद है। (सब कुछ अनुकूल)

समयः- प्रातः ८ बजे से ८.३०
दोपहर ३.३० से ४ बजे तक
रात्रि १२.३० बजे से १ बजे तक

५) हे नारायण हम कृपाशाली हैं, हम भाग्यशाली हैं। हम पर नारायण की असीम कृपा है, असीम कृपा है, असीम कृपा है। नारायण आपका धन्यवाद है । (कृपाशाली, भाग्यशाली)

समयः- प्रातः ८.३० से ९ बजे तक
दोपहर ४ बजे से ४.३० तक
रात्रि १ बजे से १.३० तक

६) हे नारायण आपके आशीर्वाद से हमारा घर सुख, शांति, समृद्धि लव, रिस्पेक्ट, फेथ, केअर की दिव्य ऊर्जा से भरा हुआ है और पूरी तरह सुरक्षित है.

हम जीवन के हर क्षेत्र में सफल हैं । (७ स्टार लाइफ)

समयः- प्रातः ९ बजे से ९.३० तक
शाम ६ बजे से ६.३०
रात्रि १.३० से २ बजे तक

७) हे नारायण आपका धन्यवाद है आजीवन स्वस्थ्य रहने का वरदान देने के लिए इसलिए हम पूर्ण रूप से स्वस्थ्य हैं, स्वस्थ्य हैं, स्वस्थ्य हैं । नारायण आपका असीम धन्यवाद है। (स्वास्थ्य हेल्थ)

समयः- प्रातः ९.३० से १० बजे तक
शाम ६.३० से ७ बजे तक
रात्रि २ बजे से २.३० तक

८) हे नारायण आपके आशीर्वाद से हमारे आपसी सम्बन्ध प्रेम और विश्वास से परिपूर्ण हैं । आपका असीम धन्यवाद है । (relations)

समय :- **दोपहर १ बजे से १.३० बजे तक**
शाम ७ बजे से ७.३०
रात्रि २.३० बजे से ३ बजे तक

९) हे नारायण आपके आशीर्वाद से हम हर व्यक्ति में नारायण का ही रूप देखते हैं ।

हे नारायण आपके आशीर्वाद से हम सप्त सितारा जीवन जी रहे हैं और हमारा यह गोल्डन पीरियड चल रहा है और आजीवन चलता ही रहेगा ऐसा हमारा प्रबल विश्वास है । नारायण आपका धन्यवाद है । (नारायण का रूप)

समय :- दोपहर १.३० बजे से २ बजे तक
शाम ९ बजे से ९.३०
रात्रि ३ बजे से ३.३० तक

Pavaan Vani

Dear Narayan Premiyon,

Narayan Narayan,

When I came to know that this edition of Satyug is based on Vinamrata, a thought crossed my mind that Vinamrata/ Humility is the ornament of Mahalaxmi ji and whoever adorns it, Mahalaxmi ji eagerly comes to that person.

Humility, a quality, who will adopt it entirely depends only and only on the individual. At times the circumstances and people may be adverse and you may start to lose patience but always remember that such situation has come to make you stronger.

Let me ask you a question that during a fast if you are offered your favourite, tasty food, will you eat it? The answer is - No. Similarly, we have to take an oath.

Though the circumstances be adverse, the other person be loud, we will adhere with our oath of abiding with humility.

Living in the society, you may feel it is impossible to abide by it but remember that the word possible is hidden in the world impossible.

We should be determined to follow the path of Humility with perseverance as along with perseverance comes attributes like love, respect, care which are strong threads that bind our relationships together firmly.

When we act in such a manner, we truly give meaning to our human birth and have the power to create a life which is full of care, respect and affection towards everyone. When every person sees Narayan in every being, a marvellous world will be created.

Always remember to embellish yourself with Humility.

With blessings,

R. Modi

CO-EDITOR

Deepti Shukla 09869076902

EDITORIAL TEAM

Vidya Shastry 09821327562
Mona Rauka 09821502064

Main Office

Rajasthani Mandal Office, Basement Rajnigandha Building, Krishna Vatika Marg, Gokuldham, Goregaon (East), Mumbai - 400 063.

Editorial Office

Shreyas Bunglow No 70/74 Near Mangal Murti Hospital, Gorai link Road, Borivali (W) Mumbai -92.

Regional Office

Amravati - Tarulata Agarwal	:	9422855590
Ahmedaba - C. A. Jaiwini Shah	:	9712945552
Akola - Shobha Agarwal	:	9423102461
Agra - Anjana Mittal	:	9368028590
Baroda - Deepa Agarwal	:	9327784837
Bangalore - Shubhani Agarwal	:	9341402211
Bangalore - Kanishka Poddar	:	70455 89451
Bhilwada - Rekha Choudhary	:	8947036241
Basti - Poonam Gadia	:	9839582411
Bhandra - Geeta Sarda	:	9371323367
Banaras - Anita Bhalotia	:	9918388543
Delhi - Megha Gupta	:	9968696600
Delhi - Nisha Goyal	:	8851220632
Delhi - Minu Kaushal	:	9717650598
Dhulia - Kalpana Chourdia	:	9421822478
Dibrugadh - Nirmala Kedia	:	8454875517
Dhanbad - Vinita Dudhani	:	9431160611
Devria - Jyoti Chabria	:	7607004420
Gudgaon - Sheetal Sharma	:	9910997047
Gondia - Pooja Agarwal	:	9326811588
Gorakhpur - Savita Nalia	:	9807099210
Goa - Renu Chopra	:	9967790505
Gouhati - Sarla Lahoti	:	9435042637
Ghaziabad - Karuna Agarwal	:	9899026607
Hyderabad - Snehlata Kedia	:	9247819681
Indore - Dhanshree Shilakar	:	9324799502
Ichalkaranji - Jayprakash Goenka	:	9422043578
Jaipur - Sunita Sharma	:	9828405616
Jaipur - Priti Sharma	:	7792038373
Jalgaon - Kala Agarwal	:	9325038277
Kolkatta - Sweta Kedia	:	9831543533
Kolkatta - Sangita Chandak	:	9330701290
Khamgaon - Pradeep Garodia	:	8149738686
Kolhapur - Jayprakash Goenka	:	9422043578
Latur - Jyoti Butada	:	9657656991
Malegaon - Rekha Garaodia	:	9595659042
Malegaon - Aarti Choudhari	:	9673519641
Morbi - Kalpana Joshi	:	8469927279
Nagpur - Sudha Agarwal	:	9373101818
Navalgadh - Mamta Singodhia	:	9460844144
Nanded - Chanda Kabra	:	9422415436
Nashik - Sunita Agarwal	:	9892344435
Pune - Abha Choudhary	:	9373161261
Patna - Arvindkumar	:	9422126725
Pichhora - Smita Bhartia	:	9420068183
Raipur - Aditi Agarwal	:	7898588999
Ranchi - Anand Choudhary	:	9431115477
Ramgadh - Purvi Agrwal	:	9661515156
Surat - Ranjana Agrwal	:	9328199171
Sikar - Sarika Goyal	:	9462113527
Sikar - Sushma Agrwal	:	9320066700
Siligudi - Aakaksha Mundhda	:	9564025556
Sholapur - Suvarna Valdawa	:	9561414443
Udaipur - Gunvanti Goyal	:	9223563020
Vishakhapattanam - Manju Gupta	:	9848936660
Vijaywada - Kiran Zawar	:	9703933740
vatmal - Vandana Suchak	:	9325218899

International Office

Nepal - Richa Kedia	:	+977985-1132261
Australia - Ranjana Modi	:	+61470045681
Bangkok - Gayatri Agarwal	:	0066897604198
Canada - Pooja Anand	:	+14168547020
Dubai - Vimla Poddar	:	00971528371106
Sharjah - Shilpa Manjare	:	00971501752655
Jakarta - Apkesha Jogani	:	09324889800
London - C.A. Akshata Agarwal	:	00447828015548
Singapore - Pooja Agarwal	:	+659145 4445
America - Sneha Agarwal	:	+16147873341

|| 卐 ||

Dear Readers,

||Narayan Narayan||

A few days ago, I happen to meet this child after a long time during a family get together. This boy, who works in a multinational company, highly placed was eagerly entertaining all the family members. His attitude of touching elders' feet, offering them tea and snacks was attracting everyone's attention. He gave the credit of his success to the blessings of elders.

Humility was oozing out from each and every cell of his body. Respect for elders and younger ones, words like - Thank you and Sorry reflected his values. This boy is in true sense humility personified. On observing him, spontaneously the subject for this edition of Satyug became clear to me, that is Humility.

Let us all, by treading the path of humility lead a seven-star life. With these good wishes,

Yours truly,
Sandhya Gupta

To get important message and information from NRSP Please Register yourself on **08369501979**
Please Save this no. in your contact list so that you can get all official broadcast from NRSP

we are on net

narayanreikisatsangparivar@narayanreiki

Publisher **Narayan Reiki Satsang Parivar,**
Printer - **Shrirang Printers Pvt. Ltd.,** Mumbai.
Call : 022-67847777

Humility is an attribute which raises you at high pedestal among thousands.

Humility means to be polite, be full of gentle emotions, be happy, joyous and enthusiastic. loving, affectionate, supportive, helpful and especially the feeling of brotherhood helps in nurturing the attribute of humility. Humility makes you large hearted and honest which results in smooth and lasting relationships. Humility invokes faith in you and transmits a continuous flow of energy which makes your life worthwhile. Humility fills you with the feeling of satisfaction, affection and positivity. The mother of patience is Humility. With humility develops patience and patience helps to evoke positive thought process which fills your personality with powerful bright aura. Along with humility comes honesty and honesty nurtures inner morale and confidence in you. When a humble person possesses so many qualities then by imbibing them, we can make our lives meaningful. Humility is not inherent or genetic. It can be imbibed easily by being in the society, with people and from experiences.

Giving up ego is the first step to Humility. Accept whatever you are blessed with, be it position, wealth, prosperity, respect, splendour is due to the grace of God. In Bhagwad Geeta, it is said that **whatever action you perform, give your best and dedicate it to the lord and think yourself simply as a medium.** When you act in this manner then compassion, affection and empathy become an integral part of your life. Your mind bows in front of that supreme divine power. Vinamrata is a quality that helps you to achieve success even in difficult situations. During storm the big trees fall as they are stiff while grass being humble bows down and stands up once again when storm passes. Humility teaches us to bend. Humility not only beautifies our personality but also makes our inner cells flexible. Humility leads to greatness. When we are filled with humility, we accept appreciation smoothly. Humility teaches us the attribute of learning from every person and situation.

According to Raj Didi and Narayan Shastra, we need to bring in a few changes in order to adopt humility-:

|| Narayan Narayan ||

- Every morning as soon as you wake up express Gratitude to that Supreme power for blessing you with a new day.
- When you do so the emotion of ego disappears as you understand that even your breath is not in your hand, then why to be stubborn.
- Take blessings of elders as this habit will help you to condescend and learn to value relationships.
- Be in gratitude for whatever you are blessed in life.
- Reflect what you can do so that life of everyone associated with you becomes easy and smooth.
- Pray for others. Wish progress and Seven-star life for others.
- Join Satsang.
- Do social service.
- Generously give your best by body, mind and wealth.
- Respect everyone, be empathetic and stay away from anger, complain and gossip.
- Try to learn from everyone. Give the credit of your success to others.
- Do Vaani ki sadhana - Speak right and positive words only. Speak only when required.

Imbibe good attributes and fill your life with humility because-

Humility is above all, so be humble. When weighed, the scale that is heavy Lowers. In other words, humility is the best virtue. Just like the heavier load on the scale, a humble person is always grounded. If you want to live a Seven-star life then embellish yourself with Humility.

If Didi has asked you to get in touch with her please WhatsApp details to
9167198886 / 9821327562

For Prayers with affirmation join our zoom link

विनम्रता की शक्तिशाली तरंगे।

जूम लिंक : **https://us02web.zoom.us/j/88581143451**

|| Narayan Narayan ||

Wisdom Box
(Glimpses of Satsang)

The continuous prayers in virtual Narayan Bhavan Mahayagya are really powerful. Didi conducts prayers every day at 4.30am and at 11am.Didi gives valuable tips to satsangeesso that they all can lead healthy happy seven-star life. The simple tips to improve life: -

1) Didi said, 'If you say something about someone which you cannot say or are afraid to say in his presence, it comes under the category of gossip. If you are giving your opinion on any subject, such as about government rules or rules of the institution, then it does not come under the category of gossip or condemnation.
2) When you are doing service to someone and there is a smile on his face and blessings on his lips, then Narayan shall grant you strength and power and make your work smooth and easy.
3) The prayers at 'Brahma Muhurta'(Between 3am to 6am) makes your life beautiful in this world as well as reforms other world.
4) Didi says that our fate line changes each and every moment. When you say repeatedly that this is our golden period, then your life turns into a golden period.
5) Query: - Didi, does the pooja and food we offer to the ancestors reach them?
Didi said, we do not know whether the food and water offered to our ancestors after their demise reaches them or not, but by taking care of them while they are alive, we can definitely make their life happy.
6) Humility and prosperity are two sides of the same coin, the humbler you are, the more prosperity you will attract in your life.
7) To avoid negativity from affecting us, we should understand that each person has his own thoughts. When someone's thoughts or behaviour is unfavourable to us , then we get disturbed.

A) In such a situation, we have to first move away from that place because our negative thoughts will activate the negativity of that place.

b) Join tip of the thumb with the tip of your first finger and press gently it will calm you down.

C) Bless the person with whom you are getting hurt say-" Narayan bless him with happiness, peace and prosperity "
This will have double benefit, firstly- you are blessing them secondly ,what you give, gets deposited in your account and returns to you in multiples. The Blessings sent by you modify the behaviour of the other person.

|| Narayan Narayan ||

8) Behind every event there is a reason which we try to find out after the occurrence of the event, especially if that event is negative. If you do good deeds, you will attract good things, if you do opposite then you will attract negative things in your life.

When you are leading a seven-star life, then sit down and think what good work you have done to attract seven-star life and then continue to follow those rules and increase your good deeds.

9) If we are not comfortable about person's ideology, then first of all we have to understand that it is his own ideology. If you ponder upon, what he said, then you will understand that there is truth hidden in it, if you introspect, then you will understand that it is the truth which you were not ready to accept, so rectify it. If that person is wrong, then ignore him, think that he has balanced your karmas.

10) Follow a simple process so that the person does not behave negatively with you in future. "Sit down comfortably, close your eyes, visualize the person who behaved in negative manner with you. Bring him in front of your eyes and visualize him behaving in a manner you expect him to do'. In case if you are in the habit of discussing with people, then do not discuss his negative behaviour, discuss the good behaviour which you expect from him. Soon his behaviour would also change and become positive towards you.

11) If you are suffering without doing any wrong to anyone. It is only due to your own karmas. The drum of karmas is with The Divine, when we do bad deeds, sand is poured into our drum and when we do good deeds, wheat is added to it. In thismanner layers get deposited in your drum and accordingly you get the results. If you are getting good results even after doing bad deeds, then understand that your good karma account is working.

12) If at the time of our death our account of good / bad karma, is not settled then those karmas go with us and accordingly we have to bear the consequences.

13) Thoughts are not under our control but we have control over speech. If our speech is in our control, then the universe takes care of our thoughts and we do not accumulate karmas but if we do not have control over our words , then we are bound to accumulate karmas.

Narayan divine blessings with Narayan Shakti to Gizelle Fernandes on his Birthday (30th August) for a seven-star life and success in all spheres.

|| Narayan Narayan ||

Youth Desk

The logo of Yashodham High School, where our children gained education was -

Vidya Vinayen Shobhate

The people working at all levels from the principal to the staff of the school reflected this attribute.

Above phrase is 100% true and this truth has been established time and again by our Guru Raj Didi through the results of Various techniques she advices.

The art of winning someone's heart comes only by adopting humility. Humility, not only helps in winning hearts but also brings with it many jackpots like abundance, fame, and prosperity. Not only does the outer world improvised, the sense of inner bliss increases incredibly. In this world a humble person is an empowered person. His senses help the mind to experience the bliss of infinite peace without being affected by the people and environment. The person whose mind is in control, who has conquered himself can make life meaningful.

Dear youth, let us see what are the characteristics of a humble person -

- One who is humble towards mother, father, Guru, as well as sees the same supreme power in everyone.
- One who abandons the sense of doer ship and considers himself to be a medium, just as a motor drives a car, in the same way every action going on in the world is in the hands of some divine power. We just have to give our best.
- Whose behaviour is not influenced by position, prestige, profit, loss, but only sees Narayan's presence in every person. He displays utmost respect towards everyone.
- A person who keeps politics away from family, maintains transparency and sticks to his principles. He is pure in his words and deeds.
- Maintaining the trust of your loved, keeping their sharing confidential for the sake of self-respect are also qualities of humble person.
- Even if someone speaks ill, a humble person handles calmly or waits for the other person to calm down.
- The person who does not make up stories behind someone's back, nor does he take credit for the work done by someone else. Instead believing in truth, he keeps the cooperation given by him secret.
- A person who keeps calm and adheres to peace even in adverse circumstances.
- A humble person deciphers the hidden message in challenging situations and maintains the feeling that this situation has come for my good.
- A humble person always uses the right and positive words which make the person in front of him happy.

The essence is that if we want to make life easy, simple, beautiful, meaningful, successful, prosperous and meaningful, then only and only wear the ornament of humility and imbibe this quality. Humility enriches and sustains every area of your life. Have humility, have abundance

|| Narayan Narayan ||

Children's Desk

Have humility in abundance. Remember you don't know the limits of your own abilities. Successful or not, if you keep pushing beyond yourself, you will enrich your own life—and maybe even please a few strangers. —A.L. Kennedy

To be humble is the strength of the wise. Children, Raj Didi and NRSP today is working on the lines that every NRSP attire himself with the attribute of politeness and humility. In this issue of Satyug we are highlighting the benefits of politeness and how we can attract abundance.

We all know the British were super powerful. Gandhiji adorned himself with the attribute of politeness. He never stood against the British, but stood up for his ideals and principles which lead the British to bow down and eventually the freedom of India.

Being polite means being aware of and respecting the feelings of other people. Good manners cost nothing, but they can make a huge difference as to how people feel about you. Your politeness will always be acknowledged and appreciated.

Politeness and humility go hand in hand. We are all unique creation of the Almighty. Each one of us is here with a purpose. Then why be arrogant and pompous. Raj Didi says politeness and prosperity are two sides of a coin. Politeness attracts abundance. If you are polite with your teachers, with your mentors they are so much supportive to you that at times even your faults are over looked.

How to be polite?

1) Be soft spoken

2) Acknowledge people and take time to hear them out.

3) Display care by remembering small details of their good deeds.

4) Make please and sorry an integral part of your vocabulary.

5) Be helpful and always use right and appropriate words.

Narayan divine blessings with Narayan Shakti to Padam Heda on his Birthday (31st August) for a seven-star life and success in all spheres.

Under The Guidance of Rajdidi

In this issue of Satyug, under this column we present you with the answers by Raj Didi to the queries raised by Satsangees: -

Satsangi : - Didi, at times such situations arise in life when the question arises whom do, we support, the right person or the powerful person.

Didi: - Always support the person who is right. Because when you support the right person slowly you will march towards being powerful and you will achieve success, progress and prosperity. But if you support the powerful person, you may achieve success, but that success will be short lived.

Satsangi : - Didi, we are positive in thoughts, words and deeds. We are also doing our karmic healing, but the behaviour of the associated person is still negative. What do we do then?

Didi : - When we fallsick, we retrospect about what we have eaten that has made us ill. Similarly, when the behaviour of the other person is not favourable to us, then we need to check that if we are at the receiving end of hurt, then definitely we have given hurt to someone, because we receive only what we give. Work towards improving yourself.

Satsangi : - Didi how do we balance our responsibilities at home and outside so that we give our best at both the places.

Didi : - See, we all have 24 hours and divide the 24 hrs into three portions of 8 hour each. We all need to have eight hours **sleep**. Eight hours we can dedicate to our **outside responsibility**. The balance eight hours we can keep for the **responsibility at home**. When you are spending time watching T V, Mobile or any other social media, multi task it with cutting vegetable, cleaning of drawers etc. Make a list of all the work to be done and tick the work completed. Allocate time to the work to be done and try to complete the work in that time.

Satsangi : - Why is it so easy to blame others. Is it the right thing to do?

Didi : - It is never right to blame others because when you blame others you accumulate karmas. So, do not do that. When any mistake happens take the onus on yourself, because when you actually commit a mistake, the divine Father forgives you easily.

|| Narayan Narayan ||

Role Model

This story is about the finals of high jump category for males, in the recently held Tokyo Olympics. In the finals, there were **Gianmarco Tamberi from Italy and Mutaz Essa Barshim from Qatar.** Both jumped to a height of 2.37 meters. As they both jumped to equal heights, the Tokyo Olympics authorities gave each of them 3 chances but both could not reach at a height above 2.37 meters. Both of them were given one more chance, but due to injuries in leg, Tamberi opted out. Now, Mutaz Essa Barshim could have won Gold as there was no other opponent against him, instead a noble thought crossed Barshim's Mind. He asked one of the authorities that, "If I also back out from the last chance, so can the Gold medal be shared amongst ourselves? After enquiring and confirming with the other authorities, this person came back and said, "With no doubt the medal can be shared amongst you two."

Barshim didn't give second thoughts and announced to back off from the last chance. Seeing this, Italy's Tamberi ran towards Barshim, he hugged him and their happiness had no bounds. Both became quite emotional.

What people saw was a part of a love which touches people and which is beyond sports. This unbelievable sight signifies a world which is above race, caste, creed, and colour. Some people in this world fear to share happiness and sadness whereas on the other side some great people share gold medal.

Tongue and Teeth

A saint used to live in Varanasi. Many of his disciples used to study in his monastery. The saint called some of his disciples whose studies were completed and said, "From now onwards, while abiding the rules of the society you will have to serve the society in a polite manner too."

One of his disciples said, "Dear Saint, things don't work out every time by being polite."

The Saint understood that, he still has in himself the traits of a person who takes a lot of pride in himself. After some time, the Saint said, "Please look inside my mouth and tell that how many teeth are still left? ". Turn by turn, disciples came, glanced in his

mouth and said in unison, “All your teeth have fallen.”

The Saint said, “Is my tongue still there? The disciples thought that the Saint is joking.”

Saint said, “You don’t need to see whether my tongue is there or not, because tongue stays forever.” He further said, “It’s quite an unusual thing that tongue stays with us from the time we are born till our end but teeth’s which come later in life, leave us early. Instead, teeth should go at a later stage. Why does it happen? A disciple replied, “This is a rule of life.”

Saint said, “No. The answer to this question isn’t quite easy which you think it to be. Tongue does not break because it is flexible. It stays inside by being polite. It does not have any pride of itself. By being flexible, it has the power to tolerate anything. Hence, it stays with us forever. Whereas, teeth are very hard. They take pride in being very tough. They are aware that due to teeth only, a person’s beauty is enhanced hence they are harsh. This pride is the reason of their fall. **Hence, if you have to serve the society with dignity so always be humble like the tongue and follow the rules.**

George Washington

Once, an American President, George Washington sat on a horse and was heading towards somewhere. A horse rider Washington saw, some soldiers were not successful in picking the bundles of stick. They tried repeatedly but were not able to pick it up. The Chief of the soldiers were also there but he wasn’t helping them. Washington got astonished and asked the Chief, “Why aren’t you helping these soldiers. The Chief answered, “I am their chief and my job is to give them the orders.” ON hearing this, Washington came down from the horse, went towards the soldiers and helped them to pick the sticks. He went back on the horse and said to the Chief, “Next time when you need any help, please call your Commander-in-Chief. After he went away, the chief and soldiers came to know that he was none other than their President, George Washington.

A great person is one who hears others and behave with them politely. Such a person, earns respect from everywhere. He is loyal towards everyone. He maintains his good humble behaviour in all circumstances.

The way in which a vision never leaves its power to visualize, a snake never leaves its venom and a lion never leaves its greed for blood, the same way **a generous person never leaves its generosity.**

|| Narayan Narayan ||

Narayan Geet

Narayan Narayan ka udghosh jahan
Ram Ram madhur dhun vahan
Sabko khushiyan deta aparam paar
Jeevan mai lata sabke jo bahaar
Khole unnati, pragati, safalta ke dwar
Banata Satyug sa sansar
Wo hai wo hai hamaara Narayan Reiki Satsang Parivar
Hamara NRSP Pyara NRSP,Nyara NRSP
Pyar, adar, vishwas badhata
Rishton ko majboot banata,majboot banata,
Paropkar ka bhav jagata
Sachhayee, namrata, seva mei vishwas badhata
Sat ko karta angikar
Banata Satyug sa sansar
Vo hai, vo hai,hamara Narayan Reiki
Satsang Parivar
Satsang Parivar
Muskan ke raj batata
Tan, man, dhan se dena sikhlata
Humko jeen sikhlata
Ghar ghar prem ke deep jalata
Man, kram se jo hum dete hai
Vahi lout kar aata, vahi lout kat aata
Banata Satyug sa sansar
Vo hai, vo hai hamara Narayan Reiki Satsang Parivar
NRSP, NRSP

Finest Pure Veg Hotels & Resorts

The Byke

A HOTEL RETREAT

EAT GREEN • STAY EVERGREEN

Our Hotels : Matheran | Goa | Manali | Jaipur | Thane | Puri | UPCOMING BORIVALI (Mumbai)

THE BYKE HOSPITALITY LIMITED

Shree Shakambhari Corporate Park,Plot No.156-158,

Chakravati Ashok Complex, J.B.Nagar, Andheri (East), Mumbai - 400099.

T.: +91 22 67079666 | E.: sales@thebyke.com | W.: www.thebyke.com